पंजीयन प्रपत्र

नाम: _____

पदनाम: _____

विश्वविद्यालय/संस्थान: _____

पत्राचार का पता: _____

_____

मोबाइल नं. _____

ई-मेल: _____

शोध पत्र का शीर्षक: _____

_____

पंजीयन शुल्क: रू. 500 /- पंजीयन प्रपत्र को भरकर उसकी स्कैन कॉपी curajseminar10@gmail.com पर भेजें |

ऑनलाइन पंजीकरण हेतु कृपया इस लिंक का प्रयोग करें click here (https://forms.gle/S1YVSFYNJf4V2emL8)

Bank Detail:

Central University of Rajasthan, Bandarsindri	
Account Number	666710210000001
IFSC Code	BKID0006667

प्रतिभागी अपने आलेख curajseminar10@gmail.com पर 5 अप्रैल, 2023 तक यूनिकोड वर्ड फाइल में (साथ में पीडीएफ फाइल भी संलग्न करें) प्रेषित कर सकते हैं।

संगोष्ठी के उपरांत चयनित आलेख पुस्तक रूप में प्रकाशित किए जाएंगे।

आलेख की शब्द मर्यादा 2000 से 3500 शब्द होनी चाहिए।

संदर्भ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मानक प्रक्रिया के अनुरूप होने आवश्यक हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

डॉ. कुमार संभव पारीक
7891806330

डॉ. सुरेश सिंह राठौड़
9928344566

विश्वविद्यालय के बारे में

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूराज) की स्थापना संसद के अधिनियम (2009 के अधिनियम संख्या 25) के अंतर्गत एक नये केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में हुई तथा यह पूर्णत: भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित है। यह विश्वविद्यालय राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित है। विश्वविद्यालय लगभग 550 एकड़ के अपने स्थायी परिसर में संचालित है तथा परिसर में लगभग 2500 छात्रों के आवास हेतु पर्याप्त छात्रावास हैं।

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी इस विश्वविद्यालय की कुलाध्यक्ष तथा प्रोफेसर आनंद भालेराव जी कुलपति हैं। ज्ञान के युग की चुनौतियों का सामना करने और उच्च शिक्षा में ज्ञान की प्रगति के साथ तालमेल बनाए रखने हेतु राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय क्षेत्रीय और वैश्विक जरूरतों को पूरा करने के लिए उच्च शिक्षा के सभी आयामों जैसे – शिक्षण, अनुसंधान, विस्तार और शासन में गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। यह विश्वविद्यालय अपने 32 विभागों में 80 से अधिक स्नातक, स्नातकोत्तर तथा पीएच.डी. कार्यक्रम संचालित करता है।

संगोष्ठी के लिए प्रस्तावित उप-विषय

1. संत दादूदयाल और उनका साहित्य
2. दादूदयाल का साहित्य और वेदांत
3. दादू दयाल के साहित्य में प्रेम
4. दादू साहित्य और अद्वैतवाद
5. कबीर और दादूदयाल के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
6. दादूदयाल का समाज दर्शन और वेदांत
7. संत सुन्दरदास और उनका साहित्य
8. संत जगन्नाथदास और उनका साहित्य
9. संत रज्जब और उनका साहित्य
10. हिंदी साहित्य और सामासिक संस्कृति
11. दादू साहित्य में लोक तत्व
12. दादू साहित्य और जीवन दर्शन
13. भारतीय साहित्य और दादू दर्शन
14. दादू साहित्य में सामासिक संस्कृति
15. दादू साहित्य और रहस्यवाद
16. राजस्थान में निर्गुण संत परम्परा

(उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त प्रतिभागी मुख्य विषय को केंद्र में रखते हुए अन्य उपविषयों का चयन कर सकते हैं।)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

10 अप्रैल, 2023

दादूपंथी संतों के साहित्य में सामाजिक - सांस्कृतिक चिंतन

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि

श्रीमद् दादू पीठाधीश्वर
आचार्य प्रवर श्री गोपाल दास जी महाराज,
नरायना, जयपुर

संरक्षक

प्रो. आनंद भालेराव जी
मा. कुलपति
राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय

निवेदक

प्रो. जगदीश जाधव
डॉ. शीतल प्रसाद महेंद्रा
(संगोष्ठी संयोजक)

संगोष्ठी के बारे में

भारतीय साहित्य और दर्शन में भक्ति आन्दोलन का अपना विशिष्ट महत्त्व है। भरतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों और कलाओं पर इस आन्दोलन ने निर्णायक प्रभाव छोड़ा है। यही कारण है कि कबीर, दादू दयाल, रैदास, तुलसी, सूर, जायसी में लोक संवेदना का विस्तार मिलता है और सभी ऊँच-नीच की भेद-बुद्धि से बाहर निकालते हैं।

दादूपंथ संत सम्प्रदाय के अन्तर्गत आता है और इसकी स्थापना संत दादूदयाल ने की थी। इस सम्प्रदाय ने धर्म व समाज सुधार के महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। दादूपंथ नें उस परम तत्व की बात की जो सगुण निर्गुण से परे है। यह कबीर की तरह कटु नहीं, अपितु प्रेम पूर्वक व्यवहार के पक्षघर थे। दादूपंथ में दादूदयाल के अलावा सुन्दरदास, जगन्नाथदास, रज्जब जैसे अनेक संत हुए हैं, जिन्होने दादूपंथ के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया।

दादूपंथी सन्तो नें मनुष्य के भीतर सोई मनुष्यता को जगाने का कार्य किया है। वास्तव में इन्होंने मानव जीवन के बीच छोटी- छोटी इकाइयों को मनुष्य की गरिमा से मंडित करके देखा है। भटके हुए मानव को राह दिखाकर ईश्वर प्राप्ति का सही मार्ग प्रशस्त किया है। दादूपंथी अवधारणा जैसे विषय पर संगोष्ठी कर सामाजिक द्वैष, अलगाववाद और जातिवाद का अन्त किया जा सकता है और आदर्श समाज संगठित कर राष्ट्र व सुखी समाज की कल्पना की जा सकती है। अतः दादूपंथियो की इसी विचारधारा को विश्लेषित करने का इस संगोष्ठी का दायित्व है। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए **"दादूपंथी संतों के साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन"** जैसे विषय का चयन करना एक आदर्श और सुखी सम्पन्न राष्ट्र के लिए एक अच्छा प्रयास सिद्ध हो सकता है।

संगोष्ठी का उद्देश्य

भारतीय समाज और साहित्य में दादूपंथी विचारधारा का विशिष्ट स्थान है। दादू के समय सामाजिक विद्वेष अपने चरम पर था। इसलिए इस पंथ के संतों ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक विषमता को मिटाकर मानव धर्म की स्थापना पर बल दिया। दादू पंथियों के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति का मूलाधार प्रेम है। यही कारण है कि मानव प्रेम उनके साहित्य का केंद्र बिंदु रहा है।

सब जीवों में निर्वैरता रखना अर्थात मैत्री भाव रखना दादूपंथियो के सिद्धांतों की नींव है। अहंकार भाव एवं तन मन के विकारों को दूर करके, जीव मात्र के प्रति शत्रु भाव का त्याग करके, मैत्री और स्नेह भाव धारण करने की सीख दादूदयाल ने दी है।

अतः इस संगोष्ठी द्वारा दादूपंथी विचार धारा का प्रसार कर संसार में वैर भाव को भुलाकर प्रेम के प्रसार का एक अच्छा प्रयास होगा। इस संगोष्ठी का उद्देश्य काल प्रवाह के साथ परिवर्तित होते जीवन मूल्यों का चित्रण, भारतीय संस्कृति एवं समाज के अनुरूप समन्वित जीवन दृष्टि को देखना और बदलते भौतिकवादी परिवेश में जीवन मूल्यों का महत्व बनाये रखना है।

उक्त उद्देश्यों को लेकर चलने पर प्रस्तुत राष्ट्रीय संगोष्ठी हिन्दी में एक अच्छा प्रयास होगा। आशा है यह संगोष्ठी **"दादूपंथी संतों के साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन"** हिन्दी साहित्य व समाज में एक नयी दृष्टि का उद्घाटन करेगा।

उद्घाटन – 10 अप्रैल 2023
समय – प्रात: 10:30 बजे
कार्यक्रम स्थल: सभागार
राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
बांदरसिंदरी, किशनगढ़, जिला अजमेर, राजस्थान
पिनकोड 305817

आयोजन समिति

संरक्षक

प्रो. आनंद भालेराव जी
मा. कुलपति
राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मार्गदर्शक मंडल

डॉ. संजय अरोड़ा
प्रो. नगेन्द्र अम्बेडकर सोले
प्रो. एन. लक्ष्मी अय्यर

संगोष्ठी समन्वयक

प्रो. जगदीश जाधव
डॉ. शीतल प्रसाद महेंद्रा

आयोजन सचिव

डॉ. सुरेश सिंह राठौड़
डॉ. कुमार संभव पारीक

संयोजन समिति

प्रो. अमिताभ श्रीवास्तव
डॉ. एस.कांडासामी
डॉ. हेमलता मंगलानी
डॉ. भूमिका शर्मा
डॉ. नेहा अरोड़ा
डॉ. देवेंद्र रांकावत
डॉ. ममता खांडल
डॉ. वेदप्रकाश
डॉ. धनपती
डॉ. रामगोपाल मीणा